उमरांवकुंवरजी दीक्षा स्वर्ण जयन्ती स्मृति ग्रन्थ(फोल्डर नं. ०१२०३५)

मुख्य टाइटल
समर्पण
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
आभार
गुरुणी म. के गुणगान
अनुक्रमणिका
अभिनव संवत्सर संप्रवेश
प्रथम खण्ड –
आशीर्वचन-शुभकामना-संदेश ---------- १-४८
काव्यमय अभिनन्दन ---------- १-६०
द्वितीय खण्ड – व्यक्तित्व एवं कृतित्व
आत्माभिव्यक्ति ---------- १
ज्योतिर्धर आचार्य-संक्षिप्त जीवन रेखा ---------- ४
जय परम्परा के पांच पुष्प ---------- ८
बहुआयामी व्यक्तित्व ---------- २५
श्रमणीरत्न ---------- २७
मेरे जीवन की सन्निर्मात्री परमपूज्या गुरुणीजी ---------- ३०
महासती की प्रेरणा से स्थापित संस्थाएँ ---------- ४१
म.सा. अर्चनाजी का शिष्या-परिवार ---------- ४४
संघर्ष के तूफान में एक जलती दीपशिखा ---------- ५०
मेरी आस्था की प्रेरणास्रोत ---------- ६१
ग्रह भविष्य बताते हैं ---------- ६६
ऐसा था बचपन ---------- ६९
महासती श्री अर्चनाजी की काव्य साधना ---------- ७३
श्री मधुकर मुनिजी म.सा. का योगदान ---------- ८०
शत-शत अभिनन्दन ---------- ८५
निर्मल मन्दाकिनी महासती श्री अर्चनाजी ---------- ८८
एक महान् नारी ---------- ९५
श्रमणी-आकाश के उज्ज्वल नक्षत्र ---------- ९७
दिव्य विभूति श्री उमरावकुंवरजी ---------- १०१
साधना की परमोज्ज्वल दीपशिखा ---------- १०८
महासती श्री परमोज्ज्वल दीपशिखा ---------- १०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनमन-अभिवन्दन-अभिनन्दन ---------- ११७
योगेश्वरी महासती श्री अर्चनाजी ---------- १२१
एक अनोखा व्यक्तित्व ---------- १२४
चमके सुयशचन्द्रिका ---------- १२६
मांगलिक-कल्पवृक्ष ---------- १२७
परमोपकारी गुरुणीजी महाराज ---------- १२८
साधवो दीनवत्सलाः ---------- १२९
मांगलिक का माहात्म्य ---------- १३२
नागराज का आगमन ---------- १३३
राग और कलह से छुटकारा ---------- १३४
प्रेरणा का प्रताप ---------- १३५
बाधा हट गई ---------- १३६
विषमुक्त हुआ ---------- १३७
लकवा ठीक हो गया ---------- १३८
दामाद स्वस्थ हो गया ---------- १३९
नागराज का नमन ---------- १३९
सफेद दाग से छुटकारा ---------- १४०
पागलपन का पलायन ---------- १४१
कुंडलिनी शांत हो गई ---------- १४२
नाम की महिमा ---------- १४३
महासतीजी का अभिज्ञान ---------- १४३
चरण-रज का रहस्य ---------- १४५
मांगलिक के चमत्कार ने चकित किया ---------- १४६
मैंने स्वास्थ्यलाभ लिया ---------- १४७
पेट दर्द जाता रहा ---------- १४९
संस्मरण सुखद ---------- १५०
दिव्य जीवन की चमत्कारिक घटना ---------- १५३
नाम का प्रभाव ---------- १५४
दिव्य सौरभ ---------- १५५
समता की कसौटी पर खरी ---------- १५६
ध्यान....निजी अनुभव ---------- १५६
अचानक बरसा अमृत---------- १५९
फैले कीर्ति चतुर्दिक् ---------- १६०
वाणी का वैभव ---------- १६१
अनुकम्पा की मूर्ति ---------- १६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असीम है आस्था -- १६३
आत्मसाधऩा का अनूठा आन्द -- १६३
अज्ञात से अनूठे संकेत -- १६४
दिशा-बोध -- १६५
स्थूल से सूक्ष्म की ओर -- १६६
स्वप्न में सन्देश -- १६७
क्रोध से अक्रोध --- १६७
मांगलिक का अद्भुत चमत्कार -- १६८
घर आई ज्ञान गंगा -- १६८
सहायता की दिव्यलोक के देव ने --- १६९
दिव्य विभूतियाँ -- १७१
सत्य को समझने की सत्प्रेरणा -- १७१
रोम-रोम ऋणी -- १७३
परदुःखकातर अर्चनाजी -- १७३
अन्तस्तल पर अमृतवर्षा --- १७६
प्रेतात्माओं से मुक्ति --- १७६
वरदहस्त --- १७७
चरणधूलि ने काम किया अमृत का -- १७९
कैसे जाना मैंने --- १७९
अभूतपूर्व संथारा -- १८०
आलोक --१८१
उलझन सुलझ गयी ---१८१
ज्ञान रो दीवलो --- १८२
अदृश्य प्रावाज पर जगी आस्था --- १८४
दिव्य ज्योति -- १८४
मीठी महिमा -- १८७
चमत्कार की मूर्ति-- १८९
हृदयस्पर्शी अनुभूतियाँ --- १९५
अर्चना की अर्चना --- १९७
साधना के श्रेष्ठ स्रोत -- २०३
कुलउद्धारक गुरुणीजी --- २०४
प्रेरणास्रोत -- २०५
स्वतःश्रद्धा जगी --- २०६
प्रेतबाधा से मुक्ति -- २०६
प्रेतबाधा से मुक्ति -- २०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वानुभव --- २०९
देवकृत भविष्यवाणी ---२११
शत-शत प्रणाम --- २१३
मेरे जीवन की पथप्रदर्शिका --- २१४
रूठी नींद लौट आई -- २१६
धर्मामृत का पान किया --- २१६
किश्ती को किनारा -- २१७
तप का तेज निखरा --- २१९
विरासत में मिली श्रद्धा -- २२०
श्रद्धानत सिर -- २२१
सुयोग के स्वास्थ्य लाभ --- २२१
मुझे मेरा सम्बल मिला --- २२२
सोते को जगाये -- २२२
धर्म-आराधना का फल --- २२३
स्तोत्रपाठ का अुलनीय प्रभाव -- २२४
नवकार मन्त्र का फलित -- २२५
काटे दुःख के बन्धन --- २२५
मैंने भई सुना मांगलिक --- २२६
अनूठी आभा --- २२६
आँखों देखा सत्य --- २२७
सुना जैसा पाया --- २२८
बाबजी की कृपा अकथनीय है --- २२९
पू. म. श्री उमरावकुंवरजी म. सा. के वर्षावास --- २३१
तृतीय खण्ड – प्रवचन पीयूष
आत्म-निवेदन-- १
अर्चनार्चन --३
अर्चना-प्रवचन
भाव-शुद्धि-विहीन शुभ-कर्म खोखले -- १६
सत्याहित्य का अनुशीलन--- २८
संत और पंथ --- ३९
तूफानों से टक्कर लेने वाला आस्था का दीपक --- ५४
सम्पूर्ण संस्कृतियों की सिरमौर भारतीय संस्कृति -------------------------------------- ६९
दीर्घजीवन या दिव्यजीवन --- ८५
दहेजरूपी विषधर को निर्विष बनाओ -- ९४
विचार एवं आचार -- १०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ खण्ड – जैन संस्कृति के विविध आयाम

भगवान् महावीर की नीति – श्री देवेन्द्र मुनि -- १
कर्म-स्वरूप प्रस्तुति – श्री रमेश मुनि -- १४
कर्मवाद के आधारभूत सिद्धान्त – डॉ. शिवमुनि---२१
जैन अनुमान की उपलब्धियां – डॉ. दरबारीलाल कोठिया --------------------------------------- २४
जैन तात्त्विक परम्पराओं में मोक्षरूप-स्वरूप – राजीव प्रचंडिया ----------------------------------३१
एकात्मकता के साये में पली-पुसी हमारी संस्कृति – डॉ. भागचन्द्र भास्कर ------------------- ४७
जैन समाज दर्शन – प्रो. संगमलाल पाण्डेय--- ५३
जैनदर्शन के आलोक में पुद्गल द्रव्य – श्री सुकन मुनि म. --- ५९
शील जीवन की सुन्दर उपासना है – श्रीमती अलका प्रचण्डिया -------------------------------- ६३
आध्यात्मिक जीवन का अभइन्न अंग-उपासना – कमला जैन --------------------------------- ६७
स्याद्वाद की लोकमंगल दृष्टि एवं कथनशैली – शान्ताकुमारी धर्मावत -------------------------- ७९
वीतराग और स्थितप्रज्ञ-एक विश्लेषण – धर्मचन्द जैन -- ८५
आलंकारिक दृष्टिसे श्री उत्तराध्ययन सूत्र-एक चिन्तन – मुनि प्रकाशचन्द्र --------------------- ९५
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र की सहिष्णुता – डॉ. सागरमल जैन -----------------------११३
आचार्य हरिभद्र के ग्रन्थों में दृष्टान्त व न्याय – डॉ. दामदोर शास्त्री -------------------------- १२८
जैनधर्म में श्रमणियों की गौरवमयी परम्परा – श्री रतनमुनि -------------------------------- १४३
श्रमण का स्थल-जल-व्योम विहार – मुनि कन्हैयालाल------------------------------------- १४९
आगम का व्याख्यासाहित्य – डॉ. उदयचन्द्र जैन -- १६०
जैनधर्म में ईश्वर की अवधारणा – सौभाग्यमल जैन--------------------------------------- १७०
जैन और बौद्ध परम्पराओं में नारी का स्थान – मुनि नेमिचन्द्र ------------------------------ १७५
जैनदर्शन में तत्त्व-चिन्तन – सुभाष मुनि --- १९४
आज के युग में महावीर की प्रासंगिकता – रिखबराज कर्णावट ------------------------------ २०१
वर्तमान समय में जैन सिद्धान्तों की उपादेयता – मुनिश्री विनयकुमार ----------------------- २०४
राजस्थानी साहित्य को जैन संत कवियों की देन – डॉ. नरेन्द्र भानावत -------------------- २०७
मध्यकालीन राजस्थानी काव्य के विकास में कवियित्रियों का योगदान – डॉ. शान्ता भानावत --- २१८
मेवाड़ में संस्कृत साहित्य की जैनपरम्परा – डॉ. प्रेम सुमन जैन ---------------------------- २३१
कमशिय एवं उनका योग – डॉ. ब्रह्ममित्र अवस्थी --- २३६
धार्मिक रहस्यवाद में दिक्-काल-बोध – डॉ. वीरेन्द्रसिंह ------------------------------------ २४३
प्राकृत बोलियों की सार्थकता – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन -------------------------------------- २४६
ध्येय-प्राप्ति का हेतु भावना – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया --------------------------------------- २५४
मन-एक चिन्तन-विश्लेषण - लक्ष्मीचन्द्र -- २५९
संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल --------- २६९
साधना की सप्राणता-कायोत्सर्ग – रमेश मुनि शास्त्री --------------------------------------- २७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण-साधना – डॉ. शोभनाथ पाठक -- २९३
जैनधर्म में ईश्वरविषयक मान्यता – डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया ------------------------------ २९६
जैनधर्म में आत्म-विज्ञान – जशकरण डागा -- ३००
आचार्य हरिभद्रसूरि का गृहस्थाचार – डॉ. पुष्पलता जैन -------------------------------------- ३०७
अंधविश्वास एवं मिथ्या-मान्यताओं के निवारण में नारी की भूमिका – माया जैन -------------३११
जैनधर्म में अहिंसा – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव -- ३१५
आज के जीवन में अपरिग्रह का महत्त्व – डॉ. हुकमचन्द जैन ------------------------------- ३२१
धर्म की दिशा – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित -- ३२२
जैन आगमों में आयुर्वेद विषयक-विवरण – डॉ. तेजसिंह गौड़ ------------------------------ ३२५
जैनधर्म में समतावादी समाज-रचना के प्रेरक तत्त्व – डॉ. निजामउद्दिन ---------------------- ३३०
तत्वचिन्तन के सन्दर्भ में अनुभूतिपूरक सत्य का एक अद्भुत उपक्रम – डॉ. सी. एल. शास्त्री --- ३३९
The Jain Mathematical – Prof. L. C. Jain -- 348
Definition of the Living in Jain Cannons-An Evaluation – N. L. Jain------------------------ 356
On Geometry of Jambudvipa – Dr. S. S. Lishk--- 375

पंचम खण्ड – योग साधना

पंचविध ध्यान-पद्धति-स्वरूप विश्लेषण – महासती श्री उमरांवकुंवरजी ---------------------------- १
पातंजल-योग और जैनयोग-एक तुलनात्मक विवेचन – डॉ. लालचन्द्र जैन ---------------------- ६
वीतरागयोग – कन्हैयालाल लोढ़ा --- २४
जैनसाधना-पद्धति में ध्यान – कन्हैयालाल गोड़ -- ४६
ध्याता, ध्यान और ध्येय – आर्या सुप्रभाकुमारी -- ५६
ज्ञानार्णव में ध्यान का स्वरूप – डॉ. प्रेमसुमन जैन -- ६६
जैनदर्शन और योगसाधना - कमल माताजी --- ७२
योगदृष्टिसमुच्चय-एक विश्लेषण – डॉ. सी. एल. शास्त्री ------------------------------------- ७४
आचार्य हरिभद्रसूरि और उनका योग-विज्ञान – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन ------------------------ ९९
प्रेक्षाध्यान और शक्ति-जागरण – युवाचार्य महाप्रज्ञ -- ११६
जैन परम्परा में ध्यान – धर्मीचन्द चोपड़ा --- १२०
ज्ञानार्णव-एक विश्लेषण – डॉ. सी. एल. शास्त्री -- १२९
धर्म-साधना में चेतनाकेन्द्रों का महत्त्व – श्रीचन्द सुराना ------------------------------------ १४४
योग-स्वरूप और साधना – एक विवेचन – साध्वी श्री मुक्तिप्रभाजी ------------------------- १६२
हठयोग-एक व्यष्टि-समष्टि विश्लेषण – डॉ. श्यामसुन्दर निगम ------------------------------ १६६
योग और परामनोविज्ञान – प्रह्लादनारायण वाजपेयी -- १७५
महर्षि अरविन्द की सर्वांगयोगसाधना – ब्रजनारायण शर्मा ---------------------------------- १७७
योग और उसकी प्रासंगिकता – डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय -------------------------------- १९२
योग का विज्ञानीय स्वरूप – डॉ. वीरेन्द्र शेखावत --- १९७
योग-आसनों की प्रासंगिकता-विशिष्टता – शान्तिलाल सुराना -------------------------------- २००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तान्त्रिकयोग-स्वरूप एवं मीमांसा – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी -------------------------------------- २०३
मसीही योग – डॉ. एलरिक बारलो शिवाजी -- २०९
योग और आयुर्वेद – आचार्य राजकुमार जैन --- २२१
योग क्यों – डॉ. नरेन्द्र शर्मा-- २३०
योग के षट्कर्म एवं रोगनिवारण – डॉ. बी. के. बान्द्रे -------------------------------------- २३५
वर्तमान युग में योग का नारी पर प्रभाव – डॉ. श्रीमती मायारानी आर्म --------------------- २३७
योग तथा नारी रोग – डॉ. के. सी. खरे -- २४१
जैन-योग और उसका वैशिष्ट – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी -------------------------------------- २४५
योग और संधि पीड़ा – डॉ. रतनचन्द वर्मा --- २४९
अष्टांगयोग-एक परिचय – प्रा. अरुण जोशी -- २५१
योगानुभूतियाँ – चन्द्रशेखर आजाद -- २५३
जैन आगमों में योगदृष्टि – डॉ. सुभाष कोठारी --- २५९
क्या मोटापा योग से कम होता है – डॉ. बी. के. बान्द्रे ------------------------------------ २६४
Yoga and Health – Dr. M. L. Gharote--- 267
Tantra-Ecstasy Through Rituals – Dr. Kalidas S Joshi -- 278
Therapeutic Application of Yoga Techniques – Dr. M. L. Bhole------------------------------ 291
Yoga and Ayurveda – Dr. R. V. Ranade --- 302
Vipashyana and Preksha – Dr. J R Joshi--- 310
Guide to a fuller life – Dr. Jaydeva Yogendra -- 313
Concept of Asana-Is it an Abhbyasa or an Anusthana – Dr. B R Sharma---------------- 318
Excerising the Trunk – Smt. Sitadevi Yogendra --- 324
परिशिष्ट – अर्थसहयोगी महानुभावों का संक्षिप्त परिचय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org